Deccan Chronicle 22-May-2021

Cyclone 'Yaas' likely to intensify: IMD

AKSHAYA KUMAR SAHOO | DC
BHUBANESWAR, MAY 21

Cyclone 'Yaas' which is brewing over Bay of Bengal is likely to intensify up to a Very Severe Cyclonic Storm, the India Meteorological Department (IMD) forecasted on Friday.

Cyclonic storms having wind speed of 118-166 kmph are categorised as Very Severe Cyclonic Storms.

"A low pressure area is very likely to form over east central Bay of Bengal and adjoining north Andaman Sea on May 22. It is very likely to move northwestwards and intensify into a Cyclonic Storm by May 24. It would continue to move northwestwards, intensify further and reach north Bay of Bengal near Odisha-West Bengal coasts around 26th May morning," the IMD said. The landfall location of the system was yet to be predicted by the IMD. The system will be named as Cyclone Yaas when it intensifies into cyclonic storm.

Meanwhile, the Centre has asked Andhra Pradesh, Odisha, Tamil Nadu, West Bengal and Andaman and Nicobar Islands to ensure that health facilities are stocked with essential medicines and supplies to meet any exigencies in the wake of Cyclone Yaas which is expected to make a landfall later this month.

Apart from the impact of cyclone in Odisha and West Bengal, there may be widespread rains in Andaman and Nicobar Islands and districts of the east coast that may cause flooding, it said.

The Hans 22-May-2021

NDRF prepares for Cyclone Yaas, positions teams in Odisha, Bengal

NEW DELHI: The National Disaster Response Force (NDRF) has begun positioning its teams in West Bengal and Odisha as Cyclone Yaas is likely to hit these States on the eastern coast of the country around May 26-27, officials said on Friday.

Some of the teams dispatched to undertake evacuation, rescue and restoration work in States affected by Cyclone Tauktae on the western coast are being called back, they said.

NDRF Director General S N Pradhan tweeted that the force has decided to "airlift" West Bengal and Odisha-based teams of the force in view of Cyclone Yaas and its "possible impact" in the coastal districts of the two States. The exact number of NDRF teams to be earmarked for the latest cyclone will be decided as per inputs received from the India Meteorological Department. The situation is developing, the officials said.

The central force had earmarked a total of 101 teams for the extremely severe cyclonic storm Tauktae that developed in the Arabian Sea and mainly affected the coastal areas of Gujarat and states like Maharashtra and Goa, apart from a few others on the western coastline of the country.

The Hans 22-May-2021

Monsoon may hit State early

HANS NEWS SERVICE
BEGUMPET

- **Cyclonic circulation lies over Southeast and adjoining Central Bay of Bengal. Under its influence, a low pressure area is likely to form over east-central Bay of Bengal and adjoining north Andaman Sea around May 22**
- **It is likely to intensify into a cyclonic storm by May 24. This is expected to once again yield rainfall, as was the case with Cyclone Tauktae**
- **On May 22, Ranga Reddy Hyderabad, Medchal-Malkajgiri, Vikarabad, Sangareddy and Medak, along with 14 districts in State might witness thunderstorms with lightning**

THERE are indications of the Southwest Monsoon entering the State earlier than the usual date of June 10-12, with it advancing into some parts of South Bay of Bengal, Nicobar Islands, entire south Andaman Sea and some parts of north Andaman Sea on Friday.

According to the IMD, in view of strengthening of south westerlies in the lower tropospheric levels, fairly widespread to widespread rainfall activity and persistent cloudiness are indicated.

The IMD bulletin said a cyclonic circulation lies over South-east and the adjoining Central Bay of Bengal. Under its influence, a low pressure area is very likely to form over the east-central Bay of Bengal and the adjoining north Andaman Sea around May 22. It is very likely to intensify into a cyclonic storm by May 24. This is expected to once again yield rainfall, as was the case with Cyclone Tauktae.

In view of these weather conditions, the bulletin on Friday warned of thunderstorms with lightning very likely to lash on May 22 isolated places in Ranga Reddy, Hyderabad, Medchal-Malkajgiri, Vikarabad, Sangareddy and Medak, along with 14 districts in the State.

According to the bulletin, rain or thundershowers would occur from May 22 to 25 in Hyderabad towards evening or night. The day temperatures are likely to be 37, 37, 38, 38 degrees Celsius respectively. On May 26 and 27 the forecast is partly cloudy sky with possibility of rain towards evening or night, with day temperatures of 38 degrees Celsius on two days.

During the last 24 hours ending at 8.30 am on Friday, Medak recorded hightest day temperature of 40.8 degrees Celsius. The other temperatures in the State were: Nalgonda 39.5, Adilabad 38.3, Bhadrachalam 38.2, Hanamkonda 38, Ramagundam 37.8, Khammam & Nizamabad 37 each, Mahbubnagar 36, , Hyderabad 34.9, Hakimpet 34.2 and Dundigal 34.1.

File No.T-74074/10/2019-WSE DTE

Rajasthan Patrika 22-May-2021

तौकते लाया खुशहाली, 'मुस्कुराई' पिछोला झील

उदयपुर. आमतौर पर मई की गर्मी में झीलों का स्तर गिरने लगता है, लेकिन इस बार तौकते चक्रवाती तूफान से फिर झीलों में पानी की आवक हुई है। पानी की आवक होने से ठीक पहले मंगलवार शाम तक पिछोला का लेवल 9 फीट से नीचे था। रात में अचानक हुई आवक के कारण गेट खोलकर पानी निकालना पड़ा। इसके बाद बुधवार शाम तक लेवल 9.4 फीट रहा। फिर से लबालब होकर पिछोला के घाट निखर उठे। गणगौर घाट से लिया गया पैनोरमिक नजारा। फोटो : **प्रमोद सोनी**

File No.T-74074/10/2019-WSE DTE

Hindustan 22-May-2021

उदास है गंगा और खामोश हिमालय

सुंदरलाल बहुगुणा ने बड़ा काम यह किया कि युवा पीढ़ी को समाज व पर्यावरण को दुरुस्त करने की चिंताओं से लैस कर दिया। स्मृति शेष :

शेखर पाठक
इतिहासकार एवं
संपादक, पहाड़

क्रूर कोरोना ने प्रख्यात पर्यावरण कार्यकर्ता और कई सामाजिक आंदोलनों के सूत्रधार सुंदरलाल बहुगुणा को हमसे छीन लिया। हिमालय और गंगा के लिए चलाई गई मुहिम के जरिए दुनिया का ध्यान आकर्षित करने वाले बहुगुणा पर्यावरण को एक बड़ा मुद्दा बनाने के लिए सदैव याद किए जाएंगे। वह एक ऐसे समय में हमसे विदा हुए, जब भोगवादी जीवन शैली व विकास के नाम पर प्रकृति के मर्दन से उत्पन्न महामारी और गंगा में शवों के तैरने जैसी अभूतपूर्व चुनौतियां हमारे सामने खड़ी हैं।

तत्कालीन टिहरी रियासत के एक राजशाही समर्थक परिवार में पैदा हुए बहुगुणा की शिक्षा-दीक्षा उस समय के नामी संस्थानों में हुई थी। वह चाहते, तो उस वक्त टिहरी रियासत में किसी बड़े पद पर तैनात हो सकते थे, लेकिन उन्होंने सुविधाजनक रास्ता चुनने के बजाय शोषित-पीड़ित जनता का साथ देने की राह चुनी। टिहरी रियासत के खिलाफ सबसे बड़ा विद्रोह करने वाले श्रीदेव सुमन से प्रेरणा लेकर उन्होंने टिहरी को राजशाही से मुक्त करने के आंदोलन में खुद को समर्पित कर दिया। बहुगुणा ने कई बार राजशाही की हिंसा झेली, दमन झेला, लेकिन जनपरस्ती का रास्ता कभी नहीं छोड़ा।

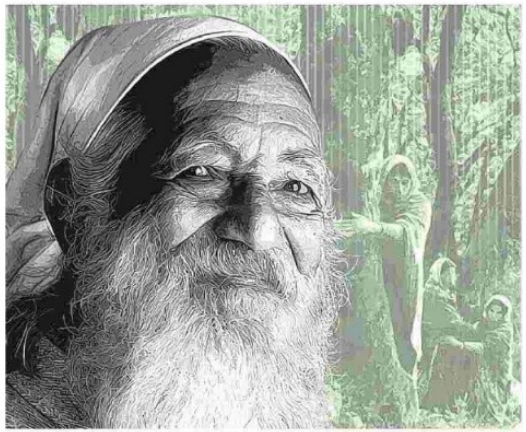

चित्रांकन : भूपेन मंडल

ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ देश में स्वतंत्रता आंदोलन के जोर पकड़ने के साथ ही जब टिहरी में राजशाही के विरुद्ध आक्रोश बढ़ने लगा, तब बहुगुणा इस मुहिम के अगुआ दस्ते में शामिल हो गए। राजशाही के खिलाफ आंदोलन कर रहे प्रजामंडल के वह अग्रणी नेताओं में शामिल रहे और देश को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए जुटी कांग्रेस के सचिव भी। लेकिन आजादी के बाद 1956 में बहुगुणा की जीवन-दिशा बदल गई, और इसमें उनकी पत्नी विमला बहुगुणा का बड़ा योगदान रहा। सर्वोदय कार्यकर्ता सरला बहन की शिष्या विमला बहुगुणा ने उनके सामने शर्त रख दी थी कि शादी के बाद वह राजनीति नहीं, सिर्फ समाज सेवा करेंगे। इस शर्त ने बहुगुणा का जीवन-दर्शन तो बदला ही, उत्तराखंड में आजादी के बाद के शुरुआती जनांदोलनों का उन्हें अगुआ भी बना दिया।

बहुगुणा ने जैसे ही सक्रिय राजनीति छोड़कर सामाजिक आंदोलन शुरू किए, पूरे सामाजिक परिवेश में हलचल पैदा हो गई। उन्होंने उस दौर में समाज के हाशिये के लोगों को सम्मान दिलाने के लिए छुआछूत विरोधी, दलितों को मंदिर में प्रवेश दिलाने जैसे आंदोलन शुरू किए। इन आंदोलनों में भारी विरोध झेलने के बावजूद बहुगुणा अडिग रहे। इसके बाद उन्होंने नशे के खिलाफ आंदोलन शुरू किया। इसके लिए भी उन्हें खूब विरोध झेलना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। यह आंदोलन गढ़वाल से कुमाऊं तक फैला और अंततः सरकार को पूरे उत्तराखंड को नशामुक्त क्षेत्र घोषित करना पड़ा। हालांकि, 'सिस्टम' ने पहाड़ पर नशा के जारी रखने के दूसरे रास्ते निकाल लिए।

धर्मग्रंथों में हिमालय की महिमा नई बात नहीं है। पर बहुगुणा ने देश-दुनिया की ऑक्सीजन, जल-भंडार व पर्यावरण-सुरक्षा में हिमालय के योगदान को महत्व दिलाने में अहम योगदान दिया। इस मुहिम में वह केवल आज के उत्तराखंड तक सीमित नहीं रहे। उन्होंने कश्मीर से कोहिमा तक पदयात्रा की, जिसने पूरे हिमालयी समाज को जोड़ने और उनकी पर्यावरणीय चिंताओं को एक-दूसरे से साझा करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। नेपाल और भूटान में भी पदयात्राएं करके बहुगुणा ने हिमालयी समाज की चिंताओं को एक-दूसरे तक पहुंचाया।

वह सबसे अधिक चर्चा में तब आए, जब उन्होंने टिहरी में भागीरथी और भिलंगना के संगम पर बन रहे टिहरी बांध का विरोध शुरू किया। हालांकि बहुगुणा के शामिल होने के पहले आंदोलन शुरू हो चुका था, मगर इसे देश-दुनिया में ख्याति बहुगुणा के शामिल होने के बाद मिली। उन्होंने इस आंदोलन के जरिए न केवल गंगा को बचाने की मुहिम को सामाजिक-राजनीतिक एजेंडा बनाने के लिए राजनीति को मजबूर किया, बल्कि बड़े बांधों के विनाशकारी प्रभाव के प्रति पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया। बहुगुणा के आलोचक भले यह कहें कि वह टिहरी की लड़ाई जीत नहीं सके, लेकिन यह उनके ही संघर्ष का प्रतिफल है कि टिहरी में पुनर्वास के सवाल को संजीदगी से निपटाने के लिए सरकारें मजबूर हुईं और दुनिया भर में बड़े नदी-बांधों के पर्यावरणीय दुष्प्रभावों के खिलाफ जनमत तैयार होने लगा।

बहुगुणा बार-बार यह कहा करते, 'शासक याद रखें, हिमालय पानी के लिए है, 'रेवेन्यू' के लिए नहीं। हम हिमालय वासी विकास के नाम पर की जा रही आत्मघाती गतिविधियों से काफी त्रस्त हैं। हिमालय के लिए एक दीर्घकालिक योजना की जरूरत है। मैं प्रकृति के वरदान गंगा को मरते हुए नहीं देख सकता।' वह यह भी कहते कि मुद्दा विकास बनाम पर्यावरण का नहीं है। यह तो अस्तित्व की लड़ाई है। इन मुद्दों को लेकर वह टिहरी बांध के कोने में एक छोटी सी कुटिया बना वर्षों सत्याग्रह, अनशन करते रहे। लेकिन सरकारों ने उनकी नहीं सुनी या फिर उन्होंने जो वादे उनसे किए, उन्हें पूरा नहीं किया। इसके बावजूद बहुगुणा विचलित नहीं हुए। यही कहते रहे, जब सरकारें इस स्तर पर आपका विरोध करें, तो यह आपके आंदोलन की सफलता है।

बहुगुणा का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने अपने जीवनकाल में उत्तराखंड की युवा पीढ़ी को अपने समाज, पर्यावरण को दुरुस्त करने की चिंताओं से लैस किया। सन 1974 में अस्कोट-आराकोट जैसी सुदूर पश्चिम नेपाल से हिमाचल की सीमा तक पदयात्रा हो या टिहरी में हेंवल घाटी में बीज बचाओ आंदोलन, बहुगुणा की प्रेरणा इनमें अहम रही। वह हर बैठक में अपने पिट्ठू में अखरोट के पौधे लेकर आते और कहते, अपने गांव में लगाना, यही पहाड़ के स्वावलंबन का आधार बनेगा। बहुगुणा मानते थे कि यदि उत्तराखंड से बहने वाली नदियों का पानी हर चोटी तक पहुंचा दिया जाए, तो यह राज्य आत्मनिर्भर हो जाएगा। वह प्रकृति पर आधारित स्वावलंबी जीवन के बड़े पैरोकार थे और ताउम्र अपने इस दर्शन पर अडिग रहे।

सुंदरलाल बहुगुणा के जाने से उत्तराखंड, देश और दुनिया की उस पीढ़ी का सबसे अधिक नुकसान होने वाला है, जो अपने प्राकृतिक संसाधनों को बचाए रखने के साथ अपनी अगली पीढ़ियों के सुखद भविष्य का सपना देखती है। उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि यही होनी चाहिए कि हम प्रकृति का अविवेकी दोहन बंद करें और अपने आसपास के प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित जीवन जीने के प्रयास करें, ताकि प्रकृति हमें हर संकट से बचाने में ढाल बन जाए, वह हमसे कुपित न हो।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

Amar Ujala 22-May-2021

सेवानिवृत्त न्यायाधीश और प्रमुख सचिव करेंगे यमुना प्रदूषण के कार्यों की समीक्षा

वृंदावन (मथुरा)। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) ने कोसी ड्रेन से वृंदावन में प्रदूषित हो रही यमुना की स्थिति को लेकर चिंता जाहिर करते हुए प्रदेश के मुख्य सचिव सहित हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश से रिपोर्ट मांगी है।

इसमें प्रमुख सचिव को वृंदावन स्थित यमुना नदी में सीवेज और औद्योगिक कचरे के निस्तारण और अब तक की कार्रवाई की समीक्षा करने को कहा है। वृंदावन के प्राचीन मदनमोहन मंदिर के सेवायत आचार्य दामोदर शास्त्री और विजय किशोर गोस्वामी द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई के बाद यह आदेश पारित किया गया है। याची के अधिवक्ता ने बताया कि कि वृंदावन में यमुना में सीवेज और औद्योगिक कचरे वाले 19 नालों सहित लगभग 40 छोटे और बड़े चैनल थे। कोसी शहर का लगभग पूरा कचरा यमुना में गिरता है। एनजीटी को यह भी अवगत कराया कि गत 27 जनवरी को मुख्य सचिव, केंद्रीय निगरानी समिति और नदी कायाकल्प समितियों को अदालत के इस निर्देश के बावजूद पालन नहीं हुआ है। संवाद